सुखी थे हम सभी प्यार बरसता था चारों और
हर शाम सुहानी थी हमारी खुशियों भरी हर भोर
सदा स्वस्थ थे हम सब नहीं सताता था कोई रोग
धन वैभव से सम्पन्न थे खाते थे हम छप्पन भोग
हम थे प्रकृति के मालिक और वो थी हमारी दासी
प्रसन्नचित्त थे हम कभी ना आती थी हमें उदासी
दिव्य गुणों के कारण हम सब पूजनीय कहलाते थे
भक्तजन हमारे आगे मन्दिरों में शीश झुकाते थे
सुखों से भरे इस जीवन में ऐसा समय क्या आया
ऐसी कौनसी गलती से हमने सारा सुख चैन गंवाया
स्वर्ग था ये सारा संसार इसको नर्क किसने

बनाया
किसने इस सारे संसार पर राहु का ग्रहण लगाया
इस दुनिया में आए तब था यह सुखमय संसार
कैसे फ़ैल गई इस जग में दु:ख दर्द की भरमार
जतन किए कितने दु:ख से ना मिला छुटकारा
जीत गए सभी विकार हर कोई विकारों से हारा
शक्तिशाली से बन हम गए मन बुद्धि से कमजोर
रावण राज्य फ़ैल गया इस दुनिया में चारों और
माया ने लूट लिया हमारे सर्व गुणों का खजाना
रोग शोक पीड़ा भोगकर चुका रहे हम जुर्माना
सत्य पहचान नहीं खुदा की सब हो गए बेसहारा
दु:ख के काँटों का जंगल बना ये संसार सारा
रुदन आत्माओं का सुनकर हमारा बाबा आया
सत्य ज्ञान देकर दुखों से मुक्ति का मार्ग बताया
ठाना अपने मन में बाबा की मत पर चलना है

विकारों से हमें हर हाल में बचकर निकलना है
योग के बल से खुद को बनाना है सच्चा सोना
नहीं पड़ेगा हम बच्चों को कल्प कल्प फिर रोना
जागो मेरे आत्म स्नेही दु:ख की काली रात गई
व्यर्थ की बातें छोड़ो सुन लो ज्ञान की बात नई
ज्ञान योग को अपने जीवन का अंग बना लो
पुरानी पतित दुनिया के दुखों से मुक्ति पा लो
ज्ञान योग के बल से जब पावन बन जाओगे
सतयुगी संसार में जाकर लक्ष्मीपति पद
पाओगे
ॐ शांति